प्रमेयकमलमार्त्तण्ड में प्रमाणफल–निरूपण

डॉ. प्रमोद कुमार सिंह

प्रमाण–अनुचिन्तन भारतीय दर्शन का केन्द्र बिन्दु रहा है, क्योंकि प्रमाण से ही अर्थ की 'संसिद्धि' अर्थात् 'सम्यक् ज्ञान' और उसकी प्राप्ति होती है, जबकि प्रमाणाभास से अर्थ की संसिद्धि नहीं होती है– **"प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्ययः"**। 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'मा धातु' से करण अर्थ में 'ल्युट्' प्रत्यय करने से प्रमाण शब्द निश्पन्न होता है। अतः 'प्रमा' का 'करण' अर्थात् 'सर्वोत्तम साधन' ही 'प्रमाण' है। वस्तु के यथार्थ ज्ञान को 'प्रमा' कहते हैं और उस प्रमा की उत्पत्ति में जो प्रकृष्ट कारण होता है, वही 'प्रमाण' है।